मुद्रक:—
जगदीशप्रसाद शर्मा द्वारा,
कमल प्रिन्टिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर में मुद्रित।

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक में उन सात महापुरुषों के जीवन चरित्र संक्षेप में लिखे गये हैं जो वास्तविक रुप में वर्तमान राष्ट्र के निर्माता माने जाते हैं। हमारा देश ही नहीं बल्कि सारा संसार उनका आदर करता है। उनके चरित्र बालकों के लिये अवश्य ही मनन करने योग्य है क्योंकि महापुरुषों के जीवन चरित्र का बालकों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। अपने पूर्वजों की पावन गाथाओं का स्मरण करके देशवासी गौरवान्वित ही नहीं होते अपितु उनकी रगों में उत्साह की लहर दौड़ जाती है और उनका अनुकरण करने के लिये हृदय उत्सुक हो उठता है।

आशा है बालकवृन्द इन चरित्र गाथाओं को चाव से पढ़कर लाभ उठायेंगे।
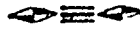
उमेश चतुर्वेदी

विषय सूची

१

लोकमान्य तिलक

आधुनिक भारतवर्ष के सर्व प्रथम राष्ट्र निर्माता लोकमान्य तिलक ही कहे जा सकते हैं। आप सब से पहले राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने जन साधारण में जागृति उत्पन्न की और भारतवासियों के दिलों में स्वराज्य की उग्र भावनाओं को उत्पन्न किया। "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" यह आपका ही मूलमंत्र था जिसकी घोषणा करके आपने देश में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया था। कांग्रेस जन्म इसके पूर्व ही होचुका था किन्तु उसका रूप इतना उग्र नहीं हुआ था। और कांग्रेसी नेता सरकार का खुला विरोध करते हुए संकोच करते थे। लोगों में साहस व शक्ति का अभाव था। "स्वराज्य" शब्द का उच्चारण करना ही घोर अपराध समझा जाता था। लोग जेल व पुलिस से बहुत डरते थे। भारतवासियों पर अंग्रेजों का आतङ्क छाया हुआ था और किसी को चूं करने का भी साहस नहीं होता था।

लोकमान्य ने उस समय की राजनीति में जो परिवर्तन किया और उसमें उन्हें जो असाधारण सफलता प्राप्त हुई वह अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उस काल की परिस्थिति देखते हुए उनका यह कार्य अत्यन्त प्रशंसापूर्ण और उपयोगी था। आपके गुणों के कारण ही जनता आपको ''लोकमान्य'' कहने लगी और यह उपाधि आपके सर्वथा उपयुक्त ही थी।

बाल्यकाल—

लोकमान्य का पूरा नाम "लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक" था। इनका जन्म दक्षिणी प्रदेश के रत्नागिरी नामक स्थान में जुलाई सन् १८५६ में हुआ था। आपके पूर्वज भी स्वतंत्रता के उपासक और स्वाभिमान के पोषक थे। आपके परदादा श्री केशवराव तिलक मराठा राज्य के सरकारी कर्मचारी थे। भारत में अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित होने पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों ने आपसे अपना कार्य जारी रखने का अनुरोध किया और कहा कि आप जिस प्रकार मराठा राज्य में काम करते थे उसी प्रकार अब भी कार्य करते रहें किन्तु उन्होंने यह स्वीकार न किया और कम्पनी का अनुरोध टाल कर पद त्याग कर दिया। उनके हृदय में स्वतंत्रता की भावनायें थी और वह परतन्त्र रह कर कार्य करना नहीं चाहते थे।

लोकमान्य के पिता श्री गंगाधर पन्त सुप्रसिद्ध विद्वान थे। वह गणित के विशेषज्ञभी थे और कवि भी। विद्वान होने के कारण

वह अपने पुत्र को भी विद्वान बनाना चाहते थे। माता पिता के आचरण व संस्कारों का प्रभाव संतान पर अवश्य पड़ता है। लोकमान्य भी अपने समय के सुप्रसिद्ध विद्वान हुये थे और बड़े बड़े विद्वान उनकी योग्यता के कायल थे। वह केवल राजनीति के ही विद्वान नहीं थे बल्कि साहित्य, इतिहास, भूगोल, धर्मशास्त्र ज्योतिषशास्त्र, भूगर्भ विद्या गणित, कानून आदि शास्त्रों के भी प्रकाण्ड पण्डित थे। उनका अध्ययन व अनुभव अपार था और उसके बल पर उनके समक्ष बड़े से बड़े विद्वान भी तर्क में तथा विद्वता में नहीं टिकते थे। बी० ए० एल०एल० बी० पास करने के बाद ही राष्ट्रसेवा के कामों में लग गये थे उनका व्यक्तित्व महान और आकर्षक था और उनकी वाणी में अद्भुत प्रभाव था। उनकी लिखी हुई 'गीता रहस्य' पुस्तक अब तक भी धार्मिक व साहित्य क्षेत्र की एक अपूर्वनिधी मानी जाती है। आप गीता के अनन्य उपासक थे और उसे संसार का सब से बड़ा ग्रन्थ मानते थे।

लोक सेवा—

आपने जो कुछ काम किया वह केवल दिखावा मात्र न था बल्कि उसमें तथ्य था। उनके ठोस कामों का प्रभाव जन साधारण पर खूब पड़ा। वह केवल मुंह से कहना ही नहीं जानते थे बल्कि स्वयं अपने वचनों को सार्थक करके दिखाते थे। जबतक मुख से कहे हुए शब्द कार्यरूप में परिणत न किये जांय तबतक उनका प्रभाव नहीं होता।

आपने सब से पहले पूना में स्कूल कालेज की स्थापना कं
इन विद्यालयों को आपने राष्ट्रीय शिक्षालयों का रूप दिया। इनके
द्वारा जनसाधारण में राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार होने लगा औ
इसी का देश में उस समय बड़ा अभाव था। दूसरी बात इन्होंने
यह की कि वकालात में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार किया।
कानून की कक्षा का आप स्वयं ही संचालन किया करते थे।
वकील स्वतंत्र पेशा होते हैं इसलिए वकीलों के दिलों में राष्ट्रीय
भावनायें जागृत होने से अधिक लाभ हो सकता है। हमारे बड़े
बड़े नेता ज्यादातर वकील बैरिस्टर ही रह चुके हैं। तीसरा महत्व-
पूर्ण काम जो आपने किया वह यह था कि राष्ट्रीय भावनाओं के
प्रचार के लिये आपने "केसरी" और "मराठा" नामक दै
का प्रकाशन शुरू कर दिया। जन जागृति के लिए पत्रों
अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि प्रचार की दृष्टि से इन
साधन दूसरा नहीं हो सकता और विचारों का परिवर्तन
ही संभव है। इन पत्रों में आपके लेख बहुत प
और विद्वत्तापूर्ण होते थे। आपने इन पत्रों में
और अपमान के विरूद्ध बड़ी निर्भीकता से
में पत्रों में इतना साहस कहां था कि सरकार
भी निकाल सके किन्तु लोकमान्य ने
करके साहस पूर्वक अपने निर्भीक स्वतन्त्र
विद्वतापूर्ण दलीलों सहित प्रकट किये।

आपने सब से पहले पूना में स्कूल कालेज की स्थापना कं
इन विद्यालयों को आपने राष्ट्रीय शिक्षालयों का रूप दिया। इनं
द्वारा जनसाधारण में राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार होने लगा औ
इसी का देश में उस समय बड़ा अभाव था। दूसरी बात उन्होंने
यह की कि वकालात में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार किया।
कानून की कक्षा का आप स्वयं ही संचालन किया करते थे।
वकील स्वतंत्र पेशा होते हैं इसलिए वकीलों के दिलों में राष्ट्रीय
भावनायें जागृत होने से अधिक लाभ हो सकता है। हमारे बड़े
बड़े नेता ज्यादातर वकील बैरिस्टर ही रह चुके हैं। तीसरा महत्व-
पूर्ण काम जो आपने किया वह यह था कि राष्ट्रीय भावनाओं के
प्रचार के लिये आपने "केसरी" और "मराठा" नामक दो पत्रों
का प्रकाशन शुरू कर दिया। जन जागृति के लिए पत्रों का होना
अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि प्रचार की दृष्टि से इनसे अच्छा
साधन दूसरा नहीं हो सकता और विचारों का परिवर्तन भी पत्रों द्वारा
ही संभव है। इन पत्रों में आपके लेख बहुत प्रभावशाली जोशीले
और विद्वत्तापूर्ण होते थे। आपने इन पत्रों में अन्याय, असत्य
और अपमान के विरुद्ध बड़ी निर्भीकता से लिखा। उस जमाने
में पत्रों में इतना साहस कहां था कि सरकार के विरुद्ध एक शब्द
भी निकाल सके किन्तु लोकमान्य ने सरकार की परवाह न
करके साहस पूर्वक अपने निर्भीक स्वतन्त्र विचार अकाट्य प्रमाणों
विद्वतापूर्ण दलीलों सहित प्रकट किये। सरकार के विरुद्ध एक
प्रकार से आपने खुला संग्राम छेड़ दिया था।

जेल यात्रा—

अपनी निर्भीकता के उपलक्ष में आपको जेल यात्रा भी करनी पड़ी। राष्ट्रसेवा के लिये जेलयात्रा करने वालों में आप सर्व प्रथम व्यक्ति थे। सन् १८८२ में आपने सबसे पहले जेल यात्रा की। उस समय तक कांग्रेस का रूप ही दूसरा था! कांग्रेस में क्रांति का नितान्त अभाव था। कांग्रे के नेता खुले रूप में सरकार का विरोध नहीं करते थे और सरकार से सहयोग रख कर कार्य करते थे अतः उनके जेल जाने का प्रश्न ही कभी उत्पन्न नहीं हुआ। अब लोकमान्य तिलक ही सर्व प्रथम ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने देश को स्वतन्त्र करने व स्वराज्य प्राप्त करने की आवाज उठाई और अपने जोशीले व्याख्यानों द्वारा जन साधारण में जागृति उत्पन्न की। सरकार का आपने प्रकट रूप में विरोध किया अतः आप सरकार की नजरों में खतरनाक प्रमाणित हो गये।

उस जमाने में जेल यात्रा करना साधारण काम नहीं था। लोग जेल के नाम से कांप उठते थे आजकल की भांति जेल एक साधारण वस्तु नहीं समझी जाती थी। जेल में उन दिनों राजनीतिक बन्दियों को खास विचार भी नहीं किया जाता था और बन्दियों का नाना प्रकार के कष्ट भी सहन करने पड़ते थे। पहली बार आपको १०१ दिन की जेलयात्रा करनी पड़ी और दूसरी बार फिर १८ मास की। सन् १६०८ में भी आपको आन्दोलन, बहिष्कार आदि के अपराध में जेल जाना पड़ा।

इस प्रकार आपको तीन बार जेलयात्रा करनी पड़ी । एक बार आपको ६ वर्ष काले पानी की सजा भी हुई सरकार क्रांतिकारी दल का कठोरता पूर्वक दमन करने पर तुली हुई थी और दृढ़ता से राजनैतिक जागरण को कुचलने का प्रयत्न कर रही थी। इसी विषय में लोकमान्य तिलक ने अपने पत्र "केसरी" में निर्भीकता पूर्वक सरकार का विरोध करते हुए टीका टिप्पणी की तथा एक लेखमाला भी लिखनी शुरु करदी । इसी अपराध में आपको बम्बई हाईकोर्ट द्वारा काले पानी की सजा प्राप्त हुई। लोकमान्य ने इस सजा के विरोध में अपनी सफाई देते हुये निर्दोषता सिद्ध की थी।

संगठन व क्रांतिप्रचार के आपके कई ढंग थे । गणेशोत्सव और शिवाजी उत्सव का सर्व प्रथम आयोजन दक्षिण प्रदेश में आपने ही प्रारम्भ किया था। आजतक भी ये उत्सव प्रतिवर्ष मनाये जाते हैं। इन उत्सवों के द्वारा सामाजिक व धार्मिक प्रचार के अतिरिक्त आपका उद्देश्य राजनीतिक जागरण व जन संगठन का भी था और इसमें आपको अभूतपूर्व सफलता भी प्राप्त हुई ।

कांग्रेस से सहयोग—

लोकमान्य तिलक का अलग ही दल था और वह तिलक दल कहलाता था। उस दल की नीति उग्र रहने के कारण कांग्रेस उससे डरती थी और उससे सहयोग नहीं रखना चाहती थी

यों कि उस समय तक कांग्रेस की नीति बहुत नरम थी। ांग्रेस केवल नाम को राष्ट्रीय राजनीतिक संस्था थी । सन् १८९२ में आपका सम्पर्क कांग्रेस से हुआ किन्तु आपका दल अलग ही रहा। तिलक दल की शक्ति बढ़ती जा रही थी और १९०५ में बगभंग के समय तिलक दल की शक्ति काफी बढ़ गई थी। सन् १९०६ में जब दादा भाई नौरोजी कांग्रेस के सभापति थे उस समय कांग्रेस ने भी अपनी नीति में कुछ परिवर्तन किया और तिलक का कार्यक्रम स्वीकार किया और स्वराज्य की घोषणा को अपना लक्ष्य रखा । फिर भी तिलक दल की नीति से कांग्रेस की नीति नरम ही रही और दोनों दल एक न हो सके। सन् १९१४ से दोनों दलों में समझौता होना शुरु हुआ और दोनों दल एक हो गये । तिलक दल की विजय हुई और कांग्रेस में ही तिलक दल भी मिल गया।

कांग्रेस की ओर से लोकमान्य तिलक प्रतिनिधि होकर विदेश गये। इधर भारत में राजनैतिक आन्दोलन जोर पकड़ गया था। महात्मा गांधी का भी सत्याग्रह संग्राम शुरु हो गया था। १९१९ में जलियान वाला हत्याकांड हो गया । जनता में जागृति खूब फैल चुकी थी और लोग सरकार के विरुद्ध खड़े होकर देश पर सर्वस्व न्यौछावर करके स्वराज्य प्राप्ति के लिये लड़ रहे थे। क्रांति की लहरें देश में चारों ओर फैली हुई थी।

लोकमान्य तिलक ने विदेशों में भारत की राष्ट्रीय संस्था का प्रतिनिधित्व सफलता पूर्वक किया और भारत का मान बढ़ाया

विदेशों की दृष्टि में भारत का मूल्य अधिक होगया । विदेश से लौटने के बाद लोकमान्य तिलक फिर स्वदेश सेवा के कार्य में लग गये । १ अगस्त सन् १९२० को लोकमान्य तिलक इस संसार से सदा के लिये प्रयाण कर गये । देश ने अपने महान् नेता के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुये आंसू बहाये । विदेशों ने श्रद्धाजिली अर्पित की । सारा देश शोकमय हो गया महात्मा गांधी ने भी अत्यन्त दुःख प्रकट किया और कहा कि "मेरा असहयोग आन्दोलन लोकमान्य की चिता भस्म से हुआ है ।"

१ अगस्त को अब स्वाधीन भारत में प्रतिवर्ष इस महा पुरुष की पुण्य तिथि मनाने की प्रथा प्रारम्भ हो गई है ।

---

(२)

महात्मा गांधी

बालको ! तुमने महात्मा गांधी का नाम अवश्य सुना होगा और "महात्मा गांधी की जय" के नारे भी कई बार लगाये होंगे। यदि तुमने गांधी जी के कभी दर्शन नहीं भी किये होंगे तो भी तुम्हारे हृदय में उनके प्रति अपार श्रद्धा और अटूट भक्ति अवश्य होगी। अपने गुणों के कारण उन्होंने लोगों के दिलों में घर कर लिया था और उनके विरोधी भी उन्हें आदर व श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे।

गांधी जी का पूरा नाम "मोहनदास करमचन्द गांधी" है। मोहनदास उनका निजी नाम है और करमचन्द उनके पिता का नाम है और गांधी उनकी जाति है गांधी जाति के वैश्य ज्यादा-तर गुजरात की तरफ ही पाये जाते हैं अन्य प्रान्तों में उनकी अधिकता नहीं है। गुजरात में पंसारी का व्यवसाय करने वालों को गांधी कहते हैं। महात्मा गांधी के पूर्वज पंसारी का काम किया करते थे इसलिये इनका घरा गांधीवंश के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

बाल्यकाल—

गांधी जी का जन्म गुजरात प्रांत की सुप्रसिद्ध रियासत पोरबन्दर में २ अक्टूबर सन् १८६९ को हुआ था। पोरबन्दर वही स्थान है किसी समय "सुदामा पुरी" के नाम से विख्यात था। इसकी स्थिति काठियावाड में द्वारकापुरी के पास है। गांधी जी के पूर्वज कई पीढ़ियों से पोरबन्दर रियासत के दीवान होते आये थे। उनके पिता भी पच्चीस साल तक पोरबन्दर, राजकोट आदि राज्यों के दीवान (प्रधान मंत्री) रहे थे और अपनी असाधारण योग्यता के लिए प्रान्त भर में विख्यात थे। वह बड़े निर्भीक और साहसी व्यक्ति थे और अपनी हट से पीछे न हटते थे चाहे उसका कोई भी विरोध करता। वह अपने स्वामी राजा और ब्रिटिश रैजीडैन्ट से भी झगड़ा करने में भयभीत न होते थे।

शिक्षा—

गांधी जी की माता पुराने विचारों की थी और रूढ़ीवाद में ही विश्वास रखती थी। उन्होंने तेरह चौदह वर्ष की अवस्था में ही गांधीजी का विवाह श्रीमती कस्तूरी बाई के साथ कर दिया। उस समय तक गांधीजी मैट्रिक की परीक्षा भी पास न कर पाये थे। सत्रह वर्ष की अवस्था में उन्होंने मैट्रिक पास किया क्यों कि पढ़ने भी देर में ही बैठे थे। स्कूल में वह होशियार छात्रों में नहीं समझे जाते थे। उनकी प्रकृति बड़ी झेंपू थी किन्तु उस समय किसे मालूम था कि वह साधारण छात्र ही

किसी दिन भारत ही नहीं संसार का सर्व श्रेष्ठ पुरुष होगा । मैट्रिक पास करने से पहले गांधी जी पितृ हीन हो चुके थे। उन्नीस वर्ष की अवस्था में बैरिस्टरी की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इन्हें विलायत जाना पड़ा। जातिवालों ने उनके विलायत जाने का बड़ा विरोध किया और यहां तक कि उनका जाति बहिष्कार भी कर दिया। उनकी माता भी डरती थी कि कहीं पुत्र विलायत जा कर कुसंग में न पड़ जावे । इसलिए उन्होंने गांधी जी से शपथ ले ली थी कि वह सदा कुसंगत से दूर रहेंगे और मांस मदिरा का कभी सेवन न करेंगे । उन्होंने अपने प्रण का पूर्णतया पालन किया। वह दृढ़ प्रतिज्ञ तो सदा से ही थे और आजन्म रहे। वह जितेन्द्रियता, सत्य व अहिंसा में अद्वितीय थे। विलायत में रह कर उन पर पाश्चात्य सभ्यता का रंग बिल्कुल न चढ़ सका। उनका वेष अवश्य विदेशी था किन्तु उनके आचरण शुद्ध व पवित्र थे। और उनमें पाश्चात्य सभ्यता की बिल्कुल गंध न थी।

बैरिस्टर के रूप में—

विलायत से बैरिस्टरी पास करके वह भारत लौट आये। और बम्बई की हाईकोर्ट में एडवोकेट हो गये। उनका प्रैक्टिस खूब चलने लगी और उन्हें अच्छी सफलता मिली। किन्तु उनकी वकालत ऐसी न चली जैसी कि अन्य प्रसिद्ध बैरिस्टरों की चला करती है। इसका मुख्य कारण यह है कि वह झूठे मुकदमे लेना पसन्द नहीं करते थे। वह सत्य के लिये लड़ते थे

और लोगों में जागृति भी पैदा होगई। लोगों का विश्वास उनकी निस्वार्थता को देखकर उनके प्रतिदृढ़ हो गया। भारतीय जनता उन्हें चाहने लगी और उनका आदर करने लगी और ब्रिटिश अधिकारी उन्हें खतरनाक व्यक्ति समझ कर उनके नाम से चौंकने लगे।

सन् १८६९ के "बूअर युद्ध" में गांधी जी ने युद्ध के घायलों की सेवा के लिये एक सहायक दल बनाया जिसने युद्ध के अवसर पर इतना अच्छा काम किया कि विदेशी पत्रों व पदाधिकारियों ने भी गांधी जी व उनके सहायक दल की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। कुछ समय पश्चात् वह भारत में वापिस आ गये और फिर बम्बई में प्रैक्टिस करने लगे।

सन्१६०३में वह फिर अफ्रीका चले गये और वहां सार्वजनिक कार्यों में लग गये। वहां उन्होंने एक प्रेस खोल लिया और एक समाचार पत्र भी प्रकाशित करने लगे। सन् १६०७ में "एशियाटी कला" का विरोध करने पर उन्हें जेल यात्रा करनी पड़ी। आन्दोलन शुरू हो गया। जनता में जोश फैलने लगा। सत्याग्रहियों से जेलें भरने लगी। कभी कभी बीच बीच में अस्थायी समझौते हो जाते थे और शान्ति हो जाती थी किन्तु फिर कुछ समय बाद जोश भड़क उठता था और आन्दोलन शुरू हो जाता था। भारत से माननीय गोखले, एण्ड्रयूज व पियर्सन महोदय भी समझौता करने के लिये गये थे। अन्त में सरकार को सुधारों की घोषणा करनी ही पड़ी।

रूप होता गया। सरकारी नौकर नौकरियां छोड़ने लगे, उपाधिधारी उपाधियों को त्यागने लगे, वकील वैरिस्टर अपनी प्रैक्टिस छोड़ने लगे स्कूल कालेजों से छात्र निकलने लगे। घर घर में विदेशी कपड़ों की होली जलने लगी।

सन् १९२८ में कांग्रेस ने औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग की किन्तु जब उस मांग का प्रभाव कुछ न हुआ तो दूसरे ही वर्ष पूर्ण स्वराज्य की मांग पेश की गई। गांधी जी ने इसका समर्थन किया। सन् १९३० में नमक कानून सत्याग्रह शुरू हो गया। गांधी जी ने ही इसको शुरू किया था। गिरफ्तारियाँ शुरू होगई। सभी बड़े बड़े नेता बन्दी बना लिये गये। इस आंदोलन का सरकार पर बड़ा प्रभाव पड़ा। बहुत कुछ उद्योग करने पर समझौता हुआ।

कुछ समय बाद विलायत में गोलमेज कान्फ्रेन्स निश्चित होने पर भारतवर्ष से महात्मा गांधी व महामना मालवीय जी कांग्रेस के प्रतिनिधि होकर विलायत गये किन्तु वहां सफल। प्राप्त न हो सकी। वहां से आते ही गांधी जी को जेलयात्रा करनी पड़ी। सरकार भेद नीति से काम लेने लगी। हिन्दू मुस्लिम झगड़े देश में बढ़ने लगे इधर कांग्रेस हिन्दू मुस्लिम एकता की कोशिश कर रही थी।

मुस्लिम लीग नामक संस्था कांग्रेस का विरोध करने लगी उसने पाकिस्तान की मांग शुरू कर दी। राष्ट्रीय विचारों के मुसलमान गांधी जी के साथ थे और मुस्लिम लीग के सर्व

प्रधान नेता मिस्टर जिन्ना थे। गांधी जी ने समझौते की कोशिश की किन्तु सफलता न मिली। गांधीजी ने आन्दोलन को न छोड़ा। वह शान्ति और अहिंसा द्वारा आन्दोलन करते रहे। अछूतोद्धार का कार्य भी इन्होंने पूर्ण संलग्नता से किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन—

द्वितीय महायुद्ध से पूर्व कुछ प्रान्तों में कांग्रेसी मन्त्री मंडल स्थापित हो गया था। और उसके कार्य को देख कर सरकार को कांग्रेसी नेताओं की योग्यता का अनुमान हो गया था। अंग्रेजों का शासन सब प्रकार सफल रहा। युद्ध की घोषणा होते ही मंत्री मंडल ने स्तीफे दे दिये क्योंकि कांग्रेस नहीं चाहती थी कि सरकार इस युद्ध में भारत को भी शामिल करे। अगस्त १९४२ में गांधी जी ने "भारत छोड़ो" आन्दोलन शुरू कर दिया। ९ अगस्त को भारत छोड़ो प्रस्ताव बम्बई के अधिवेशन में पास होने वाला था किन्तु इसके पूर्व ही रात के समय ही सब प्रसिद्ध नेता बन्दी बना लिये गये। बस फिर क्या था समाचार फैलते ही जनता का जोश भड़क उठा। सारे देश में विद्रोह फैल गया। उन्मत्त जनता ने उपद्रव शुरू कर दिये और सरकार ने भी बड़ी सख्ती से उनका दमन किया। देश को उस समय काफ़ी नुकसान पहुँचा। श्रीमती अरुणा व श्री० जयप्रकाश नारायण लापता हो गये श्री० सुभाषचन्द्र बोस गायब हो गये। सरकार लाख कोशिश करने पर भी गायब होने वाले नेताओं का पता न लगा सकी।

महायुद्ध के समाप्त होने पर बन्दी नेता मुक्त किये गये। समझौते की बातचीत शुरू हुई। शिमला कांफ्रेंस हुई। एक बार तो असफलता हा रहा दूसरी बार सफलता मिली। अन्त में सितम्बर १९४६ में अन्त: कालीन सरकार की स्थापना हुई। मुस्लिम लीग पहले तो शामिल नहीं हुई किन्तु फिर शामिल होगई

१५ अगस्त १९४७ को देशका बटवारा होगया। पाकिस्तान योजना को कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया। पाकिस्तान, हिन्दुस्तान देश के दो भाग हो गये, दोनों देशों को पूर्ण स्वतन्त्रता मिल गई। गांधीजी का ध्येय पूरा हो गया। उस दिन तत्कालीन गवर्नर लार्ड माउन्ट बैटन ने गांधी जी को "राष्ट्रपिता" के नाम से सम्बोधित कर के याद किया था। उस समय गांधी जी कलकत्ता में शान्ती का संदेश सुना रहे थे। इन दिनों देश में जो भीषण हत्याकाण्ड हुआ उससे गांधी जी को बड़ा दुःख हुआ। उन्होने शांति स्थापना की बहुत कोशिश की। पैदल ही उन्होंने नौवाखाली की यात्रा की और वहां लोगों को शान्ति और एकता का उपदेश दिया। बिहार बंगाल आदि प्रांतो में उन्होंने दौरा करके लोगों को समझाया।

अन्त—

अन्त में वह देहली में आकर स्थायी रूप से रहने लगे और नित्य प्रार्थना के समय उपस्थित जनसमूह को शान्ति व

एकता का उपदेश दिया करते थे उनके वे भाषण बड़े महत्व पूर्ण होते थे। वह निर्भीकता पूर्वक सब की आलोचना करते थे और सरकार को भी गुण दोष बताया करते थे। उन्होंने ही सरकार को विवश किया आवश्यक वस्तुओं पर कन्ट्रोल न रक्खा जावे। उनके प्रयत्न से कंट्रोल हटा लिया गया और राशनिंग न रहा। लोगों ने उनकी नीति को समझने में बहुत भूल की। उनकी गूढ़ राजनीति व दूर दर्शता को साधारण जनता न समझ सकी। लोगों ने समझा कि वह हिन्दुओं के विरोधी और मुसलमानों के पक्षपाती हैं। एक दिन अर्थात ३० जनवरी सन् १९४८ को प्रार्थना भवन में नाथुराम गोडसे नामके व्यक्ति ने अचानक उन पर पिस्तौल चलादी। संसार का सर्व श्रेष्ठ पुरुष उसी समय धराशायी हो गया और "राम राम" कह कह इस संसार को सदा के लिये छोड़ गया उस हत्यारे को पकड़ लिया गया और अभी तक लाल किले में उस पर मुकदमा चल रहा है। महात्मा गांधी का दाह कर्म संस्कार जमुना के किनारे किया गया। सारा देश शोक मग्न होगया। सारे संसार में शोक की घटायें छा गई। विश्व ने भारत की ओर आश्चर्य की दृष्टि से देखा। और भारत की दृष्टि नीची होगई। एक देशवासी ने ही अपने 'राष्ट्रपिता' की हत्या की? अब क्या हो सकता था? जो होना था सो हो गया। इस क्षति की पूर्ती क्या कभी होना संभव है? इस पाप का प्रायश्चित क्या किसी कार्य द्वारा हो सकता है?

महात्मा गांधी का नश्वर शरीर अब इस संसार में नहीं है किंतु उनका नाम अमर है और सदैव रहेगा, उनकी कीर्ति चिरस्थायी है और उत्तरोत्तर बढ़ती रहेगी। महात्मा गांधी की नीति व उनके आदेशों का पालन करने में ही देश का वास्तविक हित है और ऐसा करने से ही देश उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ती प्रदान कर सकता है।

ओउम् शान्ति-शान्ति-शान्ति !!!

दूर दूर तक फैलता जा रहा था। उनकी प्रशंसा सुनकर काला कांकर के साहित्यक राजा रामपालसिंहजी ने अपने दैनिक पत्र "हिन्दुस्तान" के लिये उन्हें बुलवाया और सम्पादन का कार्य उन्हें सौंप दिया। मालवीय जी ने अध्यापक का कार्य छोड़ कर इस कार्य को स्वीकार कर लिया और तीन साल तक योग्यता पूर्वक यही कार्य करते रहे।

उन्हीं दिनों आपको वकालत का शौक लगा। पत्र का सम्पादन कार्य करते हुये ही आपने वकालत पढ़ना शुरू करदी और सन् १८३१ में एल०-एल० बी० की परीक्षा पास कर ली। वकालत पास करनें के बाद आपने प्रयाग में ही प्रैक्टिस शुरू कर दी। थोड़े समय में ही आप प्रसिद्ध वकील हो गये और आपकी वकालत खूब चलने लगी। अनुकूल समय होते हुए भी उन्होंने अवसर का लाभ न उठाया उनका ध्यान धनोपार्जन की ओर न था और न उन्हें धन का लोभ ही था। उनके विषय में कहावत प्रसिद्ध है कि "मालवीय जी के पैरों के पास ही गेंद पड़ी थी परन्तु उन्होंने उसे आगे न बढ़ाया।" वह उस समय भी अपना अधिकांश समय सार्वजनिक कामों में ही व्यतीत करते थे। और परोपकार में ही अपना जीवन व्यतीत करना पसन्द करते थे।

देश सेवा—

आप कांग्रेस में प्रविष्ट हो चुके थे और आप की योग्यता [illegible] [illegible] निर्वाचित हो गये थे। आप ने [illegible]

व विद्वत्तापूर्ण भाषणों की सब लोग प्रशंसा करने लगे। भार-तीय ही नहीं विदेशी भी आपके भाषणों से प्रभावित हुए। आपके असम्य उत्साह व आपकी कार्य तत्परता ने आपको लोकप्रिय बना दिया। वह निराशा वादी न थे और आलस्य व शिथिलता पसन्द नहीं करते थे। उनके भाषण में ऐसा प्रभाव था कि वह अपनी ओर अपने विद्रोहियों को भी आकर्षित कर लेते थे।

कांग्रेस में बड़े उत्साह के साथ उन्होंने काम किया। वह सन् १९०८ व १९०९ में दो बार कांग्रेस अधिवेशन के सभापति बनाये गये। समय समय पर आप म्यूनिसिपल बोर्ड के चेयर-मैन व सदस्य भी चुने। जलियान वाला बाग के हत्याकांड की जांच कमेटी के भी आप सदस्य बनाये गये। सायमन कमीशन का विरोध करने वालों में भी आप प्रमुख व्यक्ति थे। कांग्रेस में कार्य करते हुए आपको कई बार जेल यात्रा भी करनी पड़ी। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और अछूतोद्धार का कार्य भी आपने बड़े उत्साह से किया। और जगह जगह दौरा करके जनता में जागृत उत्पन्न की।

सेवा कार्य से आपको विशेष रुचि थी। आपने सेवा समिति व बालचर संस्था की स्थापना की और इन संस्थाओं के द्वारा काफी संगठन किया और जनता की सेवा की। मेलों उत्सवों आदि में बहुधा इन संस्थाओं का प्रबन्ध रहता था।

कट्टर-सनातन धर्मी होते हुए भी आप [illegible] नहीं थे-

और समाज सुधार के पक्षपाती थे। इस कारण सनातन धर्म लोग उनके विरोधी भी हो गये थे किन्तु उन्होंने किसी की भी चिन्ता नहीं की और अपना कार्य करते रहे। वह हिन्दू समाज को एक ही प्रेम सूत्र में बांधना चाहते थे और अलग अलग समाजों व संस्थाओं का अपना अपना राग अलापना पसन्द नहीं करते थे। वह संगठन के कट्टर पक्षपाती थे।

सुधार कार्य—

इस उद्देश्य से उन्होंने हिन्दु समाज की स्थापना भी की थी जिसका रूप उन्हीं के प्रयत्न से आगे चल कर बदल गया और उस संस्था का नाम "हिन्दू महासभा" हो गया। इस संस्था ने काफी उन्नति की और उसका रूप अखिल भारतीय होगया। इसका प्रधान उद्देश्य हिन्दू समाज का सुधार व संगठन करना था तथा कांग्रेस की भांति इसका लक्ष्य भी राष्ट्रीयता के भाव जागृत करना था। प्रभावशाली नेताओ की कमी से इसकी उत्तरोत्तर उन्नति न हो सकी जैसी कि कांग्रेस की हुई। न तो मुस्लिम लीग की भांति वह संस्था ब्रिटिश सरकार के इशारों पर नाची और न कांग्रेस से ही इसका सहयोग रहा। समय समय पर जब सुयोग्य नेता रहे तब तब इसने काफी उन्नति की किन्तु उनके बाद इसका रूप बनता बिगड़ता रहा और यह अपने उद्देश्यों पर ही अटल न रह सकी। मालवीय जी भी अधिक सहयोग न दे सके क्योंकि उनके पास इतना समय न था।

अछूतोद्धार और शुद्धि का कार्य भी आपने किया । यद्यपि सनातनी इन दोनों बातों के विरुद्ध थे किन्तु उन्होंने किसी की चिन्ता न की और अपने उद्देश्य से पीछे न हटे । अपने विरोधियों को अपनी तीव्र तर्क शक्ति से मालवीयजी शान्त व उत्तर हीन कर देते थे ।

इन सब के अतिरिक्त उन्होंने प्रचार का कार्य भी कम नहीं किया । उनके ही परिश्रम से सनातन धर्म सभा की खूब उन्नति हुई । हर जगह महावीर दल, स्कूल, कालेज, संस्कृत पाठशाला, कन्यापाठशाला आदि स्थापित हुई । पंजाब में जहां इसकी विशेष आवश्यकता थी यह कार्य बड़ी तेजी से हुआ । अन्य प्रान्तों में भी सफलता पूर्वक काम किया गया । यदि सनातनी जनता उन्हें पूर्ण सहयोग देती तो वह इस क्षेत्र में अधिक कार्य कर सकते थे । वह सनातनी जगत में प्रधान माने जाते थे । आपके विरोधी कम नहीं थे किन्तु आपकी विद्वता व कर्मशीलता के सभी कायल थे । किसी को प्रत्यक्ष रूप में आपका विरोध करने का साहस नहीं होता था ।

हिन्दू विश्व विद्यालय—

आपका सबसे प्रसिद्ध और महान कार्य शिक्षा प्रचार है । लोगों का यह कथन कि "शिक्षा ही मालवीयजी का प्राण है और यही जीवन है" सत्य ही है । मालवीयजी केवल कहना ही नहीं जानते थे जो कुछ कहते थे वह करके दिखाते थे । वह उन नेताओं में से न थे जो अपनी वाकचातुरी के कारण ही

यशस्वी बन गये हैं मालवीय जी की प्रबल इच्छा थी कि एक बहुत बड़ी शिक्षण संस्था स्थापित की जावे और वह सारे संसार में सर्व श्रेष्ठ विद्यालय हो। उस समय की परिस्थितियां ऐसी थीं कि संसार के लिए क्या भारतवर्ष के लिए ही शिक्षा का महान् केन्द्र स्थापित करना अत्यन्त कठिन था। अन्त में आपने जो विचारा था उसे पूरा किया। उसके लिये सर्व त्याग किया, लोगों का विरोध सहन किया, घोर परिश्रम किया, नीति व चतुराई से काम लिया और "हिन्दू विश्व विद्यालय" की काशी में स्थापना की। यह विश्वविद्यालय आज कल भारतवर्ष में सब से बड़ा शिक्षाकेन्द्र है। हिन्दुओं के लिये ही नहीं सारे भारतवासियों के लिये यह एक गौरव की वस्तु है। महात्मा गांधी ने भी सन् १६२६ में अपने भाषण में कहा था—"हिन्दू विश्वविद्यालय पूज्य मालवीयजी की महान कृति है। उन्होंने भारत की जैसी सेवा की है वह सभी को मालूम है। उनकी सेवा का निचोड़ हिन्दू विश्वविद्यालय है। उनकी सेवा से कोई इन्कार नहीं कर सकता।" इस महान शिक्षण संस्था की नींव सन् १६१६ में तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिञ्ज द्वारा डाली गई थी।

साहित्य सेवा—

मालवीय जी ने हिन्दी साहित्य की उन्नति में भी काफी योग दिया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जन्मदाताओं में से आप भी एक थे और प्रथम अधिवेशन के सभापति भी आप

ही थे। हिन्दी संस्कृत के आप प्रसिद्ध विद्वान थे। संस्कृत में आप कविता भी करते थे।

आपने अंगरेजी का "लीडर" पत्र और हिन्दी के "अभ्युदय" और "मर्यादा" पत्र निकाले थे जिनका जनता में काफी प्रचार हुआ। ज्ञान प्रसाद के लिये आपने प्रयाग में "भारती-भवन" नामक एक पुस्तकालय भी खोला था जो अब भी चल रहा है। प्रयाग में ही आपने एक हिन्दू बोर्डिङ्ग हाउस भी बनवाया था जिसमें लगभग ढाई सौ छात्र रह सकते हैं।

मृत्यु—

अक्टूबर सन् १९४६ में जब मालवीय जी रुग्णावस्था में शैय्या पर पड़े हुये थे उन्होंने बंगाल के हत्याकांड का समाचार सुना। हिन्दुओं की दुर्दशा का हाल सुनकर उनका हृदय विदीर्ण हो गया और दिल को ऐसा गहरा धक्का लगा कि उनकी हृदय गति बन्द हो गई और वह सदा के लिये इस संसार से प्रयाण कर गये। मृत्यु से कुछ समय पूर्व जो सन्देश उन्होंने हिंदू जाति के लिये दिया था वह अमूल्य ही नहीं बल्कि मनन करने योग्य है। मालवीय अब नहीं हैं किंतु उनकी आत्मा अमर है और उनका जीवन चरित्र देश के बालकों व नवयुवकों को पथ प्रदर्शन के लिये विद्यमान है और सदा रहेगा।

---

(४)

सुभाषचन्द्र बोस

श्री सुभाषचन्द्र बोस आज संसार में नहीं है किन्तु उनका नाम बच्चे २ की जुबान पर है। उनका प्रिय नारा "जय-हिन्द" आज देश में सर्वत्र अपनाया जा चुका है और यहां तक कि लोग प्रणाम के स्थान पर "जय हिन्द" कहना ही पसन्द करते हैं। नेताजी के साहस त्याग व बलिदान की चर्चा विश्व के कोने २ में है और विश्व की महान्शक्तियों ने भी उनकी विलक्षण बुद्धि व शक्ति का लोहा माना है।

बाल्यकाल—

सुभाष बाबू का जन्म सन् १८९७ में कटक में हुआ था। उनके पिता राय बहादुर जानकी नाथ जो कटक म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन थे। नगर में उनकी काफी प्रतिष्ठा थी और उनकी गिनती धनी मानी व्यक्तियों में थी। वह शिक्षा प्रेमी थे और शिक्षा सुधार की ओर विशेष ध्यान दिया करते थे। उन्होंने सुभाषबाबू को भी उच्च शिक्षा दिलाने की कोशिश की। सुभाषबाबू की माता धार्मिक विचारों की थी। अतः वह सुभाष बाबू को धार्मिक कहानियां सुनाया करती थी और चरित्र गठन की शिक्षा दिया करती थी।

जब आप स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे तभी आपके जीवन में परिवर्तन होने लग गया था। आपका मन दीन दुखियों की सेवा में लग गया था। अचानक एक दिन आपको ऐसा वैराग्य उत्पन्न हुआ कि आप घर से छिप कर निकल भागे और सच्चे गुरु व पथ प्रदर्शक की तलाश करने लगे। आप कई जगह घूमे फिरे किन्तु कहीं आपको शान्ति न मिली। लोगों की स्वार्थमय भावनाओं को देखकर आपको दुःख होता था। अन्त में वह घर लौट आये माता पिता भी उनके लिए बेचैन हो रहे थे। घर लौटने पर वह फिर शिक्षा प्राप्त करने लगे बहुत कुछ कहने सुनने पर भी वह अपना विवाह करने को राजी न हुए।

उनके पिता की इच्छा उन्हें विलायत भेजकर आइ० सी० एस० परीक्षा पास कराने की थी। इच्छा न होते हुए भी पिता की आज्ञा मान कर वह विलायत चले गये। वहां सम्मान सहित परीक्षा पास की किन्तु आई० सी०एस०का पद ठुकरा दिया नाना प्रकार के प्रलोभनों से भी उनका मन विचलित न हुआ विलायत के स्वतंत्र वातावरण का उनके हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उन्होंने भी देश सेवा का व्रत ले लिया। उनके साथ कुछ अन्य लोगों ने भी उनका अनुकरण करके आई० सी० एस० का पद ठुकरा दिया था।

भारत में वापस आते ही सुभाष बाबू स्वर्गीय देशबन्धु के

साथ असहयोग आन्दोलन में भाग लेने लगे। देश बन्धु
उन पर काफी प्रभाव था और वह उन्हें अपना गुरू मानते थे।
देश सेवा का जोश तो था ही नवयुवक सुभाष कार्यक्षेत्र
उतर पड़े। उनकी वाणी में जादू था। उनका व्यक्तित्व अत्य
प्रभावशाली और आकर्षक था। थोड़े ही समय में अप
जोशीले व्याख्यानों से वह समस्त बंगाल प्रान्त में लोकप्रिय
गये। बंगाल ही नहीं देश के अन्य प्रान्तों में भी उनकी
फैल गई।

जीवन में सुख ही किसे मिल सकता है और खास कर बाबू तो सरकार की आंखों में कांटे की तरह खटका थे। जेल में उन्हें कष्ट भी काफी भोगने पड़े। ब्रह्मा की इसे जेल में तो उन्हें अजीर्ण रोग हो गया था और पीठ हड्डी में भयंकर पीड़ा भी होने लगी थी रोग यहां तक कि उनके जीवन का खतरा हो गया। जनता ने शोर चाया और आख़िर बड़ी झंझटों के बाद सरकार ने उन्हें ड़ा।

जिस प्रकार यह जेल से बाहर रह कर अत्यन्त व्यस्त रहते थे उसी प्रकार यह जेल में रह कर भी कुछ न कुछ करते ही रहते थे। यह ज्यादातर अपना समय जेल में पुस्तकें पढ़ने और सोच विचार करने में व्यतीत करते थे। जेल में रह कर यह अपना काम भी अपने हाथों से ही करते थे और किसी भी नौकर चाकर की सहायता नहीं लेते थे। यह सदा स्वावलम्बी रहे और आलस्य व अभिमान उनके हृदय में कभी पैदा न हुआ।

सन् १९२८ की कलकत्ता कांग्रेस में स्वयं सेवकों का संगठन करते हुये कांग्रेस सेनानीका उनका कार्य अभीतक लोगोंको याद है। उनकी संगठन शक्ति की सभी बड़े नेताओं ने प्रशंसा की थी। सुभाष बाबू उग्रता के लिए प्रसिद्ध थे और उग्र नेता माने जाते थे। अपने भाषणों में वह खूब खरी खरी सुनाते थे और सरकार को खुले रूप में निर्भीकता पूर्वक चैलेन्ज दिया करते थे। उनके एक २ शब्द से आग के शोले निकलते थे।

यह इस पक्ष में भी नहीं थे कि सरकार से किसी प्रकार का समझौता किया जाय। वह तो पूर्ण स्वतंत्रता के लिये प्रयत्नरत थे। कांग्रेस के औपनिवेशिक स्वराज्य के प्रस्ताव को वह पसन्द नहीं करते थे। उन्हीं के पूर्ण प्रयत्न व सहयोग से सन् १९३० की लाहौर कांग्रेस में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास हो गया। पं० जवाहरलाल नेहरू भी उनके सहयोगी थे और यह प्रस्ताव दोनों के प्रयत्न से ही हुआ।

वह कौंसिल प्रवेश के भी पक्ष में नहीं थे। लोगों के चाहने पर भी सन् १९३७ में जब कांग्रेसी मंत्री मण्डल कई प्रांतों में स्थापित हुआ तो उन्होंने कोई पद ग्रहण नहीं किया। वह स्वतंत्र रह कर जन सेवा का कार्य करना चाहते थे।

कांग्रेस से अलग—

हरिपुरा कांग्रेस के सभापति सुभाष बाबू ही चुने गये किन्तु इसके बाद ही उनके और कांग्रेस के विचारों में मतभेद होगया और दो दल हो गये। त्रिपुरी कांग्रेस में भी सुभाष बाबू ही सभापति चुने गये। यद्यपि विरोधियों ने काफी कोशिश की कि वह इस बार अध्यक्ष न बनें। स्वयम् महात्मा गांधी भी उनके अध्यक्ष बनने के पक्ष में नहीं थे। सुभाष बाबू को यह देख कर बड़ा दुःख हुआ और वह कांग्रेस से अलग हो गये। उनका अलग ही एक दल "अग्रगामी" दल बन गया और उसका कार्य तेजी से चलने लगा। उनके भाषण मुरदा दिलों में जान फूंक देते थे और सोये हुए व्यक्ति उनकी [illegible] जाग उठते थे।

कुछ समय बाद कलकत्ता में एक आंदोलन चला और सुभाष बाबू ने उसमें पूर्ण सहयोग दिया। सरकार ने उन्हें बंदी बना कर जेल भेज दिया। जेल में उन्होंने अनशन कर दिया। सरकार को उन्हें छोड़ना पड़ा। किन्तु सरकार की निगरानी में ही उन्हें घर पर रहने की आज्ञा मिली। चौबीस घंटे खुफिया पुलिस की उन पर कड़ी निगाह रहती थी।

गायब—

जब वह घर पर नजरबन्द रह कर जीवन बिता रहे थे उन्होंने एकान्तवास शुरू कर दिया और सब से मिलना जुलना बन्द कर दिया। एक दिन सब को अचानक खबर मिली कि सुभाष बाबू घर से लापता हो गये। सब को आश्चर्य हुआ और सब जगह शोर मच गया। सरकारी क्षेत्रों में सनसनाहट व घबराहट फैल गई। सरकार ने अपने परम शत्रु की तलाश करने में जी तोड़ परिश्रम किया। हर तरह से पता लगाने की कोशिश की किन्तु किंचित मात्र सफलता न मिल सकी।

सुभाष बाबू ने एकान्त वास का बहाना करके लापता होने की पूरी योजना बना ली थी। उन्होंने अपनी दाढ़ी बढ़ाई और इस प्रकार अपना रूप बदल लिया। एक दिन खुफिया पुलिस को चकमा देकर वह घर से निकल गये और एक मौलवी का वेश धारण कर लिया। इसी वेष में वह कलकत्ता से ट्रेन में बैठ कर पेशावर चले गये और वहां उन्होंने अपना नाम जिया-उद्दीन" बताया। वहां एक जासूस को उन पर सन्देह भी हो

वह इस पक्ष में थे ही नहीं कि सरकार से किसी प्रकार का समझौता किया जावे। वह तो पूर्ण स्वतंत्रता के लिये प्रयत्नरत रहे कांग्रेस के औपनिवेशिक स्वराज्य के प्रस्ताव को वह पसन्द नहीं करते थे। उन्हीं के पूर्ण प्रयत्न व सहयोग से सन् १९३० की लाहौर कांग्रेस में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास हो गया। पं० जवाहरलाल नेहरू भी उनके सहयोगी थे और यह प्रस्ताव दोनों के प्रयत्न से ही हुआ।

वह कौंसिल प्रवेश के भी पक्ष में नहीं थे। लोगों के चाहने पर भी सन् १९३७ में जब कांग्रेसी मंत्री मण्डल कई प्रांन्तों में स्थापित हुआ तो उन्होंने कोई पद ग्रहण नहीं किया। वह स्वतंत्र रह कर जन सेवा का कार्य करना चाहते थे।

कांग्रेस से अलग—

हरिपुरा कांग्रेस के सभापति सुभाष बाबू ही चुने गये किन्तु इसके बाद ही उनके और कांग्रेस के विचारों में मतभेद होगया और दो दल हो गये। त्रिपुरी कांग्रेस में भी सुभाष बाबू ही सभापति चुने गये। यद्यपि विरोधियों ने काफी कोशिश की कि वह इस बार अध्यक्ष न बनें। स्वयम् महात्मा गांधी भी उनके अध्यक्ष बनने के पक्ष में नहीं थे। सुभाष बाबू को यह देख कर बड़ा दुःख हुआ और वह कांग्रेस से अलग हो गये। उनका अलग ही एक दल "अग्रगामी" दल बन गया और उसका कार्य तेजी से चलने लगा। उनके भाषण मुरदा दिलों में जान फूंक देते और सोये हुए व्यक्ति उनकी वाणी सुनकर जाग उठते थे।

कुछ समय बाद कलकत्ता में एक आंदोलन चला और सुभाष बाबू ने उसमें पूर्ण सहयोग दिया। सरकार ने उन्हें बंदी बना कर जेल भेज दिया। जेल में उन्होंने अनशन कर दिया। सरकार को उन्हें छोड़ना पड़ा। किन्तु सरकार की निगरानी में ही उन्हें घर पर रहने की आज्ञा मिली। चौबीस घंटे खुफिया पुलिस की उन पर कड़ी निगाह रहती थी।

गायब—

जब वह घर पर नजरबन्द रह कर जीवन बिता रहे थे उन्होंने एकान्तवास शुरू कर दिया और सब से मिलना जुलना बन्द कर दिया। एक दिन सब को अचानक खबर मिली कि सुभाष बाबू घर से लापता हो गये। सब को आश्चर्य हुआ और सब जगह शोर मच गया। सरकारी क्षेत्रों में सनसनाहट व घबराहट फैल गई। सरकार ने अपने परम शत्रु को पता लगाने में जी तोड़ परिश्रम किया। हर तरह से पता लगाने की कोशिश की किन्तु किंचित मात्र सफलता न मिल सकी।

सुभाष बाबू ने एकान्तवास का बहाना करके लापता होने की पूरी योजना बना ली थी। उन्होंने अपनी दाढ़ी बढ़ाई और इस प्रकार अपना रूप बदल लिया। एक दिन खुफिया पुलिस को चकमा देकर वह घर से निकल गये और एक मौलवी का वेष धारण कर लिया। इस वेष में वह कलकत्ता से ट्रेन में बैठ कर पेशावर चले गये और वहां उन्होंने अपना नाम जि- [illegible] बताया। वहां एक काबुली को [illegible]

आजाद हिन्द सेना पर और उसके सेनानियों पर भारत सरकार ने मुकदमा चलाया। परन्तु पं० जवाहरलाल नेहरू और श्री भूलाभाई देसाई के प्रयत्न से सब की रक्षा हो गई। कांग्रेस को भी उस समय की जन जागृति से जो कि नेताजी व आजाद हिन्द सेना के कारण उत्पन्न हो गई थी बड़ा लाभ हुआ। स्वतंत्र भारत का जो रूप आज हम देख रहे हैं उसका एक कारण यह भी है। भारतवासी सदैव इसके लिये नेताजी के ऋणी रहेंगे और उनकी स्मृति देशवासियों के दिलों से कभी नहीं जा सकती। उनका नाम भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अङ्कित किये जाने योग्य है।

नेताजी का आदर्श त्याग, उनका देश प्रेम, उनका निर्मल चरित्र भारतवासियों के लिये अनुकरणीय है और रहेगा। भारतवर्ष को नेताजी पर महान गर्व है और सदा रहेगा। कोई भी राष्ट्र ऐसे नेता को पाकर अभिमान से अपना शीस ऊँचा कर सकता है। आज वह नहीं है किन्तु उनकी याद सदैव हमारे दिलों में ताजा बनी रहेगी। स्वतंत्र भारत में और खास कर उस अवसर पर जब कि देहली के लाल किले पर पहली बार तिरंगा झंडा फहराया गया था हमारे नेताओं को सुभाष बाबू की याद आ गई और न केवल उन्हीं को बल्कि समस्त देश वासियों को उनका अभाव बहुत दुःख प्रद मालूम हुआ। यद्यपि उनके विचार कांग्रेस से नहीं मि[illegible] किन्तु वह कांग्रेस के विरोधी न हुए और न उन्होंने का[illegible] नि

पहुँचाने के लिए कोई कार्य किया महात्मा गांधी जी ने स्वयं कई बार उनके कार्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी । आजाद हिंद सेना का समाचार जान कर तो सारा देश और सभी नेता चकित हो गये थे और उनके गुणों पर मुग्ध थे । अभी तक लोगों को पूर्ण विश्वास नहीं होता कि नेताजी का वास्तव में देहावसान होगया है । यह उनके प्रति लोगों के अगाध प्रेम का ही कारण कहा जा सकता है ।

---

(५)

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

स्वतंत्र भारत के निर्माण में राजाजी का मुख्य स्थान है। देश ने खूब सोच समझकर आपको अपना शासक चुना है और स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल बनाकर बुद्धिमानी व दूरदर्शिता का परिचय दिया है। वास्तव में इस समय आप ही एक उचित परामर्शदाता के रूप में भारत के शासन को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिये सर्वथा योग्य थे। यह स्पष्ट ही है कि एक सफल राजनीतिज्ञ ही शासन की बागडोर हाथ में लेकर सफलता प्राप्त कर सकता है। अब तक का इतिहास देखने से यही अनुभव प्राप्त होता है। भारत को स्वाधीनता प्राप्त कराने में राजाजी ने जिस कूटनीति का प्रयोग किया है उसे देखकर संसार के बड़े बड़े राजनीतिज्ञ भी चकित हो गये हैं। आपकी तीव्रबुद्धि पर सारा संसार आश्चर्य करता है। आपको इस युग का चाणक्य कहा जाता है और यह सर्वथा सत्य ही है।

प्रारम्भिक जीवन—

आपका जन्म दक्षिण प्रदेश के सेलम जिले के होसूर ग्राम में सन १८७६ में हुआ था। इनके पिता संस्कृत के विद्वान थे

और सारा परिवार ही परम धार्मिक था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मैसूर राज्य की पाठशाला में हुई थी। शिक्षक इनसे सदा प्रसन्न रहा करते थे क्योंकि यह पढ़ने लिखने में बड़े तेज थे। कुछ समय बाद आप मद्रास चले गये और वहीं आपने शिक्षा प्राप्त की। बी० ए० पास करने के बाद आपने बी० एल० (वकालत की परीक्षा) पास की। वकालत से आपको शौक था और बचपन से ही आप तर्कशील थे। सन १६०० में आप अपने ही निवासस्थान सेलम में वकालत का काम करने लगे।

वकालत के साथ ही आपकी रुचि सार्वजनिक कार्यों की ओर भी थी। यही कारण था कि आप थोड़े ही समय में खूब प्रसिद्ध हो गये। कुछ समय बाद आप सेलम के म्यूनिसिपल चेयरमैन हो गये। इस पद पर आपने प्रजा के हित का सदैव ध्यान रक्खा। प्रजा के अतिरिक्त आपके काम की सरकार ने भी प्रशंसा की क्योंकि आपके द्वारा सरकार और प्रजा दोनों का ही हित हुआ। आपके ही प्रयत्न से सेलम कोआपरेटिव बैंक की भी स्थापना हुई थी। कुछ समय बाद आप मद्रास जाकर हाईकोर्ट में वकालत करने लगे। वहां आपकी प्रतिभा खूब चमकी और बड़े बड़े बैरिस्टर वकील भी आपकी प्रतिभा को देखकर दंग रह गये। आपकी मासिक आय उस समय लगभग पांच हजार रुपये हो जाती थी।

आपका सार्वजनिक जीवन वास्तव में मद्रास से ही शुरू हुआ। उन दिनों श्रीमती प[illegible] मातावचन्द भी पहले

थे विदेशी महिला होते हुये भी भारतवर्ष को स्वराज्य दिलाने की चेष्टा कर रही थी। उनके द्वारा स्थापित "होमरूल लीग" के आन्दोलन से देश में जागृति फैल रही थी। राजाजी भी इसके प्रभाव से न बच सके। उन्होंने भी आन्दोलन में भाग लेने का निश्चय किया। उस समय राजाजी की उम्र ३८ वर्ष की थी।

उन्हीं दिनों लोकमान्य तिलक के कार्यों ने भी देश में अभूतपूर्व जागृति फैला दी थी। गोपालकृष्ण गोखले ने स्वतंत्रता आन्दोलन में नवीन स्फूर्ति उत्पन्न कर दी थी। महात्मा गांधी का प्रभाव देश में सर्वत्र बढ़ता जा रहा था। स्वतंत्रता आन्दोलन की आग सब जगह भड़क चुकी थी। देश में कई सुयोग्य नेता अलग अलग प्रान्तों में आन्दोलन को व्यापक व सफल बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। ऐसे समय में राजाजी पर प्रभाव कैसे न पड़ता? वह भी स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति आकर्षित हो गये और उनकी भावनायें जागृत होने लगी। सन् १९२० में आपने वकालत त्याग दी और हजारों रुपयों की मासिक आमदनी की कुछ चिन्ता न की।

गांधीजी से आपका प्रथम परिचय रौलट एक्ट के विरोध के समय हुआ। दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया और फिर तो दोनों का सम्बंध दृढ़ होता गया। यद्यपि कई बार पारस्परिक मतभेद भी हुआ किन्तु सम्बंध में कोई अन्तर न पड़ा। गांधीजी के जेल जीवन के समय राजाजी ने यं

थ सम्पादन भी किया था। सन् १६२० और १६२१ में आप नागपुर तथा अहमदाबाद कांग्रेस महाधिवेशन में महामंत्री बनाये गये। सन् १६३० में आपने जेल यात्रा की और २१ मास की कड़ी कैद के बाद सन् १६३२ में रिहा हुये। सन् १६३२ में ही आपने कांग्रेस के अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण किया। सन् १६३३ में फिर आपको जेलयात्रा करनी पड़ी। आप कट्टर गांधी वादी हैं और गांधीजी के जीवन का आप पर बड़ा प्रभाव पड़ा है यद्यपि विचारों से कई बार आपका उनसे मतभेद हो चुका है। आपने अपनी पुत्री का विवाह अन्तर जातीय विवाह का आदर्श उपस्थित करते हुये गांधी जी के पुत्र "श्री देवदास गांधी" से किया है। सनातन धर्म के कट्टर अनयायी होते हुये भी आप पक्के समाज सुधारक हैं और हरिजनोद्धार, विधवा विवाह, अन्तरजातीय विवाह आदि के समर्थक हैं।

महान राजनीतिज्ञ

आपने भारत की राजनीति में अपना नाम अमर कर लिया है। संसार के बड़े बड़े राजनीतिज्ञ भी आपकी राजनीति का लोहा मानते हैं। आपकी प्रकृति में ही कूटनीति का स्वभाविक अंश है। कांग्रेस के अधिवेशन में प्रस्तावों के निर्माण के समय आप अपनी कूटनीति का प्रयोग करते हैं। यही कारण है कि लोग आपको वर्तमान युग का चाणक्य कहते हैं। यह स्पष्ट ही है कि बिना [illegible] सता पूर्वक नहीं चलाया जा सकता।

थे विदेशी महिला होते हुये भी भारतवर्ष को स्वराज्य दिला की चेष्टा कर रही थी। उनके द्वारा स्थापित "होमरुल लीग" के आन्दोलन से देश में जागृति फैल रही थी। राजाजी भी इसके प्रभाव से न बच सके। उन्होंने भी आन्दोलन में भाग लेने का निश्चय किया। उस समय राजाजी की उम्र ३८ वर्ष की थी।

उन्हीं दिनों लोकमान्य तिलक के कार्यों ने भी देश में अभूतपूर्व जागृति फैला दी थी। गोपालकृष्ण गोखले ने स्वतंत्रता आन्दोलन में नवीन स्फूर्ति उत्पन्न कर दी थी। महात्मा गांधी का प्रभाव देश में सर्वत्र बढ़ता जा रहा था। स्वतंत्रता आन्दोलन की आग सब जगह भड़क चुकी थी। देश में कई सुयोग्य नेता अलग अलग प्रान्तों में आन्दोलन को व्यापक व सफल बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। ऐसे समय में राजाजी पर प्रभाव कैसे न पड़ता? वह भी स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति आकर्षित हो गये और उनकी भावनायें जागृत होने लगी। सन् १९२० में आपने वकालत त्याग दी और हजारों रुपयों की मासिक आमदनी की कुछ चिन्ता न की।

गांधीजी से आपका प्रथम परिचय रौलट एक्ट के विरोध के समय हुआ। दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया और फिर तो दोनों का सम्बंध दृढ़ होता गया। यद्यपि कई बार पारस्परिक मतभेद भी हुआ किन्तु सम्बंध में कोई अन्तर न पड़ा। गांधीजी के जेल जीवन के समय राजाजी ने यंग इंडिया

नेतृत्व भी किया था। सन् १९३० और १९३१ में आप
नागपुर तथा अहमदाबाद कांग्रेस महाधिवेशन में महामंत्री
चुने गये। सन् १९३० में आपने जेल यात्रा की और २१ मास
की कड़ी कैद के बाद सन् १९३२ में रिहा हुये। सन् १९३२ में
ही आपने कांग्रेस के अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण किया। सन्
१९३३ में फिर आपको जेलयात्रा करनी पड़ी। आप कट्टर गांधी
वादी हैं और गांधीजी के जीवन का आप पर बड़ा प्रभाव
पड़ा है यद्यपि विचारों से कई बार आपका उनसे मतभेद भी
हुआ है। आपने अपनी पुत्री का विवाह अन्तर जातीय विवाह
का आदर्श उपस्थित करते हुये गांधी जी के पुत्र "श्री देवदास
गांधी" से किया है। सनातन धर्म के कट्टर अनुयायी होते हुये
भी आप पक्के समाज सुधारक हैं और हरिजनोद्धार, विधवा
विवाह, अन्तरजातीय विवाह आदि के समर्थक हैं।

महान राजनीतिज्ञ

आपने भारत की राजनीति में अपना नाम अमर कर
लिया है। संसार के बड़े बड़े राजनीतिज्ञ भी आपकी राजनीति
का लोहा मानते हैं। आपकी प्रकृति में ही कूटनीति का स्वाभा
विक अंश है। कांग्रेस के अधिवेशन में प्रस्तावों के निर्माण
के समय आप अपनी कूटनीति का प्रयोग करते हैं।
यही कारण है कि लोग आपको वर्तमान युग का चाणक्य
कहते हैं। यह स्पष्ट ही है कि बिना कूटनीति के शासन सफ
लता पूर्वक नहीं चलाया जा सकता।

सर वादी नीति के पक्षपाती हैं और कभी निराश नहीं होते । आप सदा हंसमुख रहते हैं और कभी किसी से शत्रुता का व्यवहार नहीं करते। मित्र बनाने में आप विशेष निपुण हैं । आपका साधारण जीवन और सादा रहन सहन आपकी निजी विशेषतायें हैं।

आप सफल लेखक भी हैं। आपकी लेखन शैली का परिचय आपकी मौलिक रचनाओं से मिलता है। आपकी कई रचनाओं का अनुवाद हिन्दी में भी हो चुका है। गीता जो आपका सर्व प्रिय ग्रंथ है उस पर भी आपने एक सुन्दर टीका लिखी है।

लेखक होने के साथ ही आप सफल वक्ता भी हैं । आपके भाषण विद्वत्तापूर्ण, तर्कपूर्ण तथा प्रभावशाली होते हैं साथ ही जनता को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं । समालोचना करने में आप पटु हैं और विकट परिस्थितियों को भी आप बड़ी चतुराई से संभाल लेते हैं। बड़ी बड़ी विकट समस्याओं को सुलझाने में आप दक्ष हैं। आपका तर्क इतना सुन्दर और अकाट्य होता है कि विपक्षी का मुंह बंद हो जाता है । अपनी वक्तृता में मीठी चुटकियों के बीच हास्य का पुट देकर तथा अपने तर्क की पुष्टी के लिये व्यंग का आश्रय लेकर आप लोगों के दिलों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

आपके राजनीतिक विचार धार्मिक विचारों से सम्बंधित है किन्तु आप रूढ़िवादी नहीं हैं।

[illegible]वादी नीति के पक्षपाती हैं और कभी निराश नहीं होते । [illegible]प सदा हंसमुख रहते हैं और कभी किसी से शत्रुता का [illegible]वहार नहीं करते। मित्र बनाने में आप विशेष निपुण हैं । [illegible]पका साधारण जीवन और सादा रहन सहन आपकी निजी [illegible]विशेषतायें हैं।

आप सफल लेखक भी हैं। आपकी लेखन शैली का परि-[illegible]चय आपकी मौलिक रचनाओं से मिलता है। आपकी कई रच-नाओं का अनुवाद हिन्दी में भी हो चुका है। गीता जो आपका [illegible]सबसे प्रिय ग्रंथ है उस पर भी आपने एक सुन्दर टीका लिखी है।

लेखक होने के साथ ही आप सफल वक्ता भी हैं । आपके भाषण विद्वत्तापूर्ण, तर्कपूर्ण तथा प्रभावशाली होते हैं साथ ही जनता को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं । समालोचना करने में आप पटु हैं और विकट परिस्थितियों को भी आप बड़ी चतुराई से संभाल लेते हैं। बड़ी बड़ी विकट समस्याओं को सुलझाने में आप दक्ष हैं। आपका तर्क इतना सुन्दर और [illegible] होता है कि विपक्षी का मुंह बंद हो जाता है । अपनी वक्तृता में मीठी चुटकियों के बीच हास्य का पुट देकर तथा अपने तर्क को पुष्टी के लिये व्यंग का आश्रय लेकर आप लोगों के दिलों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

आपके राजनीतिक विचार धार्मिक विचारों से सम्बंधित हैं किन्तु आप कट्टरपंथी नहीं हैं।

शामिल हो गये। यहां भी उनकी प्रतिभा खूब चम
ती मेज विद्यार्थी माने जाते थे। उनकी योग्य
का यही प्रमाण है कि कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी ने
शिक्षा के लिये प्रसिद्ध है जवाहरलालजी को
करने के बाद एम० ए० की उपाधि उनको दी
दे दी थी। उस समय एक भारतीय को वि
प्राप्त होना साधारण बात न थी। अपने
अनुसार जवाहरलालजी ने बैरिस्टरी की प
भी पास कर ली। बैरिस्टरी पास करने
सपरिवार भारत वापस आगये और प्रै
पं० मोतीलालजी उन्हें नामी बैरिस्टर के
थे। प्रैक्टिस शुरू करते ही जवाहरलाल
निकला और वह शीघ्र ही नामी बैरिस्टर

विवाह—

सन १९१६ में उनका विवाह देहल
जवाहरलालजी कौल की कन्या "कम
मोतीलालजी ने विवाह में मनमाना ध
शान से विवाह रचाया। जवाहरला
बड़ा सुखमय बीता। पति पत्नि दोनों
जिस प्रकार कमलाजी पतिव्रता थीं उस
भी एक पत्निव्रत रखते थे। सन् १९१७
कन्य ई जिसका नाम "इन्दुमती

वे "इन्दिरा" के नाम से प्रसिद्ध हुईं। सन् १६२४ में उनके एक पुत्र भी हुआ किन्तु वह जीवित न रह सका। केवल "इन्दिरा" (अब इन्दिरा गांधी) ही जवाहरलालजी की एक मात्र संतान है। जब कमलाजी के बहुत समय तक कोई सन्तान न हुई तो लोगों ने यहां तक कि उनके माता पिता ने भी जो कि पौत्र का मुख देखने के लिए बहुत उत्सुक थे जवाहरलालजी से दूसरा विवाह करने का अनुरोध किया किन्तु जवाहरलालजी ने इस प्रस्ताव को कभी स्वीकार न किया।

देश सेवा:—

जवाहरलालजी को बैरिस्टरी का काम करने की विशेष रुचि न थी। जब वह विद्यालय में पढ़ रहे थे उन्हीं दिनों उनके हृदय में देश सेवा के भाव जागृत हो गये थे। वहाँ, सभा सोसाइटियों में वह भाग लिया करते थे और कभी कभी व्याख्यान भी देते थे। इधर भारतवर्ष में उन दिनों स्वतंत्रता आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। लोकमान्य तिलक, गोखले, [illegible], लाला लाजपतराय, एनीबेसेन्ट आदि का प्रभाव देश में बढ़ता होता जा रहा था और देश के चारों ओर क्रान्ति की आग भड़क रही थी। नेताओं के जोशीले व्याख्यान जनता में उत्साह भर रहे थे और समाचार पत्र जहर उगलते थे।

जवाहरलालजी नवयुवक थे। उनके हृदय में जोश था। वे यह चाहते थे इस आन्दोलन में कूद पड़ें, किन्तु अपने पिता के विरुद्ध वह कुछ भी स्वयं नहीं करते थे। इन बातों पर

दाखिल हो गये। वहां भी उनकी प्रतिभा खूब चमकी और वह सबसे तेज विद्यार्थी माने जाते थे। उनकी योग्यता और प्रतिभा का यही प्रमाण है कि कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी ने जो संसार भर में शिक्षा के लिये प्रसिद्ध है जवाहरलालजी को उनके बी० ए० पास करने के बाद एम० ए० की उपाधि उनकी योग्यता से खुश होकर दे दी थी। उस समय एक भारतीय को विलायत में इतना मान प्राप्त होना साधारण बात न थी। अपने पिता की इच्छा के अनुसार जवाहरलालजी ने बैरिस्टरी की परीक्षा भी सन १९१२ में पास कर ली। बैरिस्टरी पास करने के बाद जवाहरलालजी सपरिवार भारत वापस आगये और प्रैक्टिस शुरू कर दी। पं० मोतीलालजी उन्हें नामी बैरिस्टर के रूप में देखना चाहते थे। प्रैक्टिस शुरू करते ही जवाहरलालजी का काम खूब चल निकला और वह शीघ्र ही नामी बैरिस्टर हो गये।

विवाह—

सन १९१६ में उनका विवाह देहली के प्रतिष्ठित रईस पं० जवाहरलालजी कौल की कन्या "कमला" से हो गया। पं० मोतीलालजी ने विवाह में मनमाना धन व्यय किया और बड़ी शान से विवाह रचाया। जवाहरलालजी का वैवाहिक जीवन बड़ा सुखमय बीता। पति पत्नि दोनों में पारस्परिक प्रेम रहा! जिस प्रकार कमलाजी पतिव्रता थीं उसी प्रकार जवाहरलालजी भी एक पत्निव्रत रखते थे। सन् १९१७ में कमलाजी के एक कन्[illegible] ई जिसका काम "इन्दुमती" रक्खा गया जो बाद

में "इन्दिरा" के नाम से प्रसिद्ध हुई। सन् १९२४ में उनके एक पुत्र भी हुआ किन्तु वह जीवित न रह सका। केवल "इन्दिरा" (अब इन्दिरा गांधी) ही जवाहरलालजी की एक मात्र संतान है। जब कमलाजी के बहुत समय तक कोई सन्तान न हुई तो लोगों ने यहांतक कि उनके माता पिता ने भी जो कि पौत्र का मुख देखने के लिए बहुत उत्सुक थे जवाहरलालजी से दूसरा विवाह करने का अनुरोध किया किन्तु जवाहरलालजी ने इस प्रस्ताव को कभी स्वीकार न किया।

देश सेवा:—

जवाहरलालजी को बैरिस्टरी का काम करने की विशेष इच्छा न थी। जब वह विलायत में पढ़ रहे थे उन्हीं दिनों उनके हृदय में देश सेवा के भाव जाग्रत हो गये थे। वहां सभा सोसाइटियों में वह भाग लिया करते थे और कभी कभी व्याख्यान भी देते थे। इधर भारतवर्ष में उन दिनों स्वतंत्रता आन्दोलन की धूम मच रही थी। लोकमान्यतिलक, गोखले, महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, ऐनीबेसेन्ट आदि का प्रभाव देश में व्यापक होता जा रहा था और देश से चारों ओर क्रांति की आग भड़क रही थी। नेताओं के जोशीले व्याख्यान जनता में जागृत उत्पन्न कर रहे थे और समाचार पत्र जहर उगलते थे।

जवाहरलालजी नवयुवक थे। उनके हृदय में जोश था। फिर वह भला इस प्रभाव से कैसे बचते किन्तु अपने पिता के विरुद्ध चलना भी वह पसन्द नहीं करते थे। इन बातों का

थे। महात्मा गांधी का प्रभाव भी इसी प्रकार बढ़ रहा था। लोग उनकी ओर आकर्षित हो रहे थे। हर जगह [illegible] हलचल मची हुई थी। वल्लभभाई उस नगर (अहमदाबाद) में थे जहां राजनैतिक कामों का काफी जोर था। वह बच कर बच न सके और राजनीति से प्रभावित होने लगे। उन्हें रा[illegible]तिक क्षेत्र में लाने का श्रेय गांधीजी को ही दिया जा सकता [illegible] गोधरा के राजनैतिक सम्मेलन में गांधीजी ने रचनात्मक कार्य करने के लिए एक कमेटी बनाई और उसका मंत्री वल्ल[illegible] को ही बनाया। गांधीजी एक ही नजर में उन्हें पहचान गये और उन्हें राजनीति के क्षेत्र में लाने का प्रयास करने लगे। वल्लभभाई ने कमेटी के मंत्री रूप में पहला काम प्रान्त में प्रचलित बेगार प्रथा को नष्ट करने का किया। इस काम में उन्होंने जिस साहस से काम लिया उसे देखकर लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करने लगे और गांधीजी को भी उनकी योग्यता व प्रतिभा पर विश्वास हो गया। सरदार पटेल को भी शौक हो गया और सार्वजनिक कामों की ओर उनकी दिलचस्पी बढ़ने लगी।

राजनैतिक क्षेत्र में—

गांधीजी ने जब खेड़ा में सत्याग्रह शुरू किया तो पटेलजी को भी उसमें शामिल कर लिया। सत्याग्रही के रूप में आपने कई स्थानों का दौरा किया और अपने कार्य्य को सफलता पूर्वक निभाया। अब आपके जीवन में परिवर्तन होने लगा और आप देश सेवा की ओर आकर्षित हो गये।

रौलट एक्ट और जलियान वाला बाग की घटनाओं से सारे देश में तहलका मच गया और गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन की तैयारी कर दी। उस समय आपने भी बैरिस्टरी छोड़ दी और हजारों रुपयों की आमदनी पर लात मार दी। आपने भी असहयोग आन्दोलन में उत्साह सहित भाग लिया।

महात्मा गांधी ने जिस गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की थी उसको सफलता पूर्वक चलाने के लिये पटेल जी ने ही अधिक परिश्रम किया था। नागपुर, बोरसद आदि स्थानों में आपने सफलता पूर्वक सत्याग्रह का संचालन किया। अहमदाबाद म्यूनिसिपैल्टी के चेयरमैन रह कर आपने जो काम किया वह अब तक लोगों को याद है। उनके साहस और उनकी शासन योग्यता देखकर लोग दंग रह गये।

सरदार पटेल का विशेष महत्वपूर्ण कार्य्य बारदोली सत्याग्रह का संचालन था। भारतीय इतिहास में यह सत्याग्रह अपना विशेष स्थान रखता है। सन् १९२७ में किसानों पर लगान की वृद्धि करके बोझ लाद दिया गया। किसानों ने इसका विरोध किया और एक बड़ी सभा करके सरदार पटेल को आन्दोलन संगठित करने का भार सौंप दिया। वल्लभभाई ने ४ फरवरी सन् १९२८ को एक बड़ी सभा फिर की और उसमें लगभग ८९ गांवों के प्रतिनिधि शामिल हुये। वल्लभभाई ने बम्बई गवर्नर को चेतावनी दी कि लगान बढ़ाया जाय किन्तु हुआ कि लगान वसूल

था जैसा उस समय था जब कि आप नवयुवक थे । देशवासियों को अपने इस महान नेता पर गर्व था और विश्वास था कि इस महापुरुष के सेनापतित्व में देश अधिकाधिक उन्नतशील होगा । परन्तु हमारे इस वीर सेनानी का अकस्मात तारीख १५ दिसम्बर १९५० को स्वर्ग वास हो गया ।

था जैसा उस समय था जब कि आप नवयुवक थे। देशवासियों को अपने इस महान नेता पर गर्व था और विश्वास था कि इस महापुरुष के सेनापतित्व में देश अधिकाधिक उन्नतशील होगा। परन्तु हमारे इस वीर सेनानी का अकस्मात तारीख १५ दिसम्बर १९५० को स्वर्ग वास हो गया।

❀समाप्त❀